International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 420-423

स्वतंत्रता आन्दोलन में इलाहाबाद नगर की भूमिका

प्रदीप कुमार उपाध्याय
वरिष्ठ शोध छात्र, भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

इलाहाबाद एक धार्मिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र होने के साथ–साथ स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण स्थान एवं प्रेरणा स्रोत स्थल रहा है। सन् 1857 से 1947 तक इलाहाबाद का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण था। 1857 के संग्राम काल में दबी हुई चेतना पुनः जाग्रत हुई और पूरे देश को संगठित करने के महान अभियान का सूत्रपात इस क्षेत्र में बहुत जल्दी ही हो गया। 1857 के प्रारम्भ में स्वतंत्रता संग्राम 1859–60 तक किसी न किसी रूप में चलता रहा। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1884 में हुई और 1921 में उसने नागपुर में गांधीजी के नेतृत्व में सर्वप्रथम एक विशाल जन आन्दोलन आरम्भ करने का निश्चय किया। बीच के इन वर्षों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की दृष्टि से इलाहाबाद का महत्व कितना अधिक था, यह इस बात से स्पष्ट है कि इस बीच कांग्रेस के तीन वार्षिक अधिवेशन इलाहाबाद में ही हुए। पहला अधिवेशन 1888 में जार्ज यूल की अध्यक्षता में हुआ। दूसरा अधिवेशन 1892 में उमेश चन्द्र बनर्जी की अध्यक्षता में और तीसरा अधिवेशन 1910 में श्री विलियम बेडर वर्न की अध्यक्षता में हुआ (बाजपेयी, डॉ0 राजेन्द्र कुमारी, 1985)।

देश की स्वतंत्रता आन्दोलन में इलाहाबाद नगर की महती भूमिका थी। स्वतंत्रता हेतु बैठकें स्वराज भवन में होती थीं, महत्वपूर्ण योजनायें भी इन्हीं बैठकों में बनायी जाती थी।

आन्दोलन में समाचार–पत्रों की भूमिका

स्वतंत्रता आन्दोलन में इलाहाबाद के समाचार पत्रों की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका थी क्योंकि ये जनभावना को उद्वेलित करने के सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत थे। नवम्बर सन् 1907 में 'स्वराज्य' नामक इलाहाबाद से एक पत्र निकला, यहीं से सर्वप्रथम इस शान्तिपूर्ण प्रान्त में क्रान्तिकारी प्रचार तथा प्रयास का सूत्रपात होता है। इसके संस्थापक सम्पादक शान्तिनारायण भटनागर थे जो पहले किसी पंजाबी समाचार पत्र के संचालक थे। इस पत्र का उद्देश्य लाला लाजपत राय तथा सरदार अजीत सिंह की नजरबन्दी से रिहाई की यादगारी थी। इस समाचार पत्र का लहजा शुरू से ही सरकार के विरुद्ध था, किन्तु ज्यों–ज्यों इसके दिन बीतने लगे, यह और गरम होता गया। अन्त में खुदीराम बोस के सम्बन्ध में आपत्तिजनक लेख लिखने के कारण इनको लम्बी सजा हुई (सिन्हा, हरेन्द्र प्रताप 1953)।

'स्वराज्य' समाचार–पत्र फिर भी बन्द न हुआ, चलता रहा। एक के बाद एक इसके आठ सम्पादक नियुक्त हुए जिसमें सबको सजाएं हुई। इन आठ सम्पादकों में से सात पंजाबी थे। 1910 के प्रेस ऐक्ट के बाद ही यह समाचार पत्र बन्द किया जा सका। जिन लेखों पर आपत्ति की गई थी उनमें से एक खुदीराम बोस पर था। दूसरे ऐसे लेखों के शीर्षक इस प्रकार थे– 'बम या बॉयकाट', 'जालिम और दबाने वाला'।

इलाहाबाद में 1909 में एक ऐसा ही समाचार पत्र 'कर्मयोगी' निकाला जिसके सम्पादक पं0 सुन्दरलाल 'भारत में अंग्रेजी राज्य' के लेखक थे। सम्पादकों एवं समाचार पत्रों में कार्य करने वालों को कितना कष्ट और सजाएं थी। इसका अंदाज इस कहानी से आसानी से हो जाता है। 'स्वराज्य' में ही एक सम्पादक के लिए विज्ञापन प्रकाशित हुआ था, जिसमें कहा गया था– ''स्वराज्य अखबार के लिए ऐसा सम्पादक चाहिए जिसे दो सूखी रोटियाँ, एक गिलास सादा पानी और हर सम्पादकीय लेख पर दस वर्ष की सजा मिलेगी''। इस शर्त पर भी 'स्वराज्य' को सम्पादकों की कमी नहीं पड़ी और न तो सम्पादकों को सजा देने में ही किसी प्रकार की कंजूसी की गयी। सम्भवतः संसार के इतिहास में शायद ही कोई दूसरा अखबार होगा जिसके आठ सम्पादकों को कुल मिलाकर 125 वर्ष की सजाएं दी गयी हों।

पत्रकारिता की दृष्टि से इलाहाबाद ने अपनी शानदार परम्परा का बराबर निर्वाह किया। 1910 में ही 'कर्मयोगी' को प्रेस ऐक्ट का शिकार होना पड़ा और बाद में चलकर 'अभ्युदय' को भी ऐसी ही लड़ाई लड़नी पड़ी। ऐसे ही 'भविष्य' साप्ताहिक समाचार पत्र उन दिनों उग्र विचारधारा का प्रमुख पत्र था। इस प्रकार स्पष्ट है कि इन समाचार पत्रों ने वातावरण बनाने में जितना योगदान किया उतना और माध्यमों के बसके बाहर था (बाजपेयी, डॉ0 राजेन्द्र कुमारी 1985)।

इस प्रकार उपर्युक्त अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता आन्दोलन में इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाले पत्र–पत्रिकाओं– स्वराज, कर्मयोगी, अभ्युदय आदि की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

क्रान्तिकारी आन्दोलन की कर्म भूमि

इलाहाबाद क्रान्तिकारी आन्दोलन की कर्म भूमि के रूप में बना रहा। गरम दलों के नेताओं का प्रभाव भी इस नगर पर बराबर पड़ता रहा। उग्र विचारों ने उस समय विद्यार्थी समाज में जो आग लगायी थी, उसके फलस्वरूप श्री गोविन्द बल्लभ पंत, पं0 रविशंकर शुक्ल, वेंकटेश नारायण तिवारी जैसे नये लोग आये। उस समय में कांग्रेस अन्य प्रदेशों में सरकारी अधिकारियों के लिए सुविधाजनक संस्था थी, तब भी उत्तर प्रदेश के गवर्नर सर आकलैण्ड इसे पसन्द नहीं करते थे। नरम विचारधारा के नेताओं के लिए भी इलाहाबाद बहुत महत्वपूर्ण शहर रहा है। मोतीलाल जी, मालवीय जी तथा तेज बहादुर सप्रू के सम्मिलित प्रयत्नों से इलाहाबाद में 'लीडर' दैनिक संवादपत्र प्रकाशित किया गया और श्री सी0वाई0 चिन्तामणि जैसे महत्वपूर्ण व्यक्ति उसके सम्पादक बनाये गये। 'लीडर' का प्रभाव इस देश की राजनीति पर काफी लम्बे समय तक पड़ता रहा।

सर तेज बहादुर सप्रू भी अपनी पीढ़ी के अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्ति थे

और उन्हें कितने ही बड़े काम करने का श्रेय प्राप्त हुआ। श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन तथा कैलाशनाथ काटजू अपने जमाने के अत्यन्त प्रमुख राजनेताओं में से थे (बाजपेयी, डॉ0 राजेन्द्र कुमारी, 1985)।

स्वतंत्रता आन्दोलन के समय इलाहाबाद क्रान्तिकारियों की कर्मभूमि के रूप में स्थापित हो चुका था। समाज के सभी वर्गों, समुदायों के लोगों की भूमिका इस आन्दोलन को सफल बनाने में थी।

राष्ट्रभाषा आन्दोलन में इलाहाबाद की भूमिका

एक स्वतंत्र राष्ट्र का आन्दोलन शुरू करने के साथ–साथ राष्ट्र भाषा का आन्दोलन भी प्रमुख रूप से इलाहाबाद से ही शुरू हुआ। भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध लेखक पण्डित बालकृष्ण भट्ट ने इलाहाबाद से 'हिन्दी प्रदीप' का प्रकाशन प्रारम्भ करके अपनी भाषा का आन्दोलन आगे बढ़ाया था। आगे चलकर मदन मोहन मालवीय और श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन ने इस आन्दोलन को एक राष्ट्र व्यापी आन्दोलन का रूप दे दिया। 1910 में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की गयी और बाद में इलाहाबाद में उसका एक मुख्यालय भी स्थापित किया गया। श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन ने पूरे जीवन भर हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए संघर्ष किया (बाजपेयी, डॉ0 राजेन्द्र कुमारी, 1985)।

असहयोग आन्दोलन के प्रारम्भ होने के पहले श्रीमती एनी बेसेंट तथा श्री लोकमान्य तिलक के नेतृत्व में चलने वाले 'होमरूल' आन्दोलन को भी इलाहाबाद ने सर्वाधिक समर्थन दिया। अंग्रेज शासकों के विरुद्ध कड़ी भाषा का उपयोग करने के कारण श्रीमती एनी बेसेन्ट को गिरफ्तार कर लिया गया। उनकी गिरफ्तारी के कारण पूरे देश में आन्दोलन की एक विशाल लहर उमड़ पड़ी और इस लहर के चलते बहुत से ऐसे लोग भी स्वतंत्रता आन्दोलन की ओर उन्मुख हुए जो अब तक तटस्थ थे। इलाहाबाद उस समय उदीयमान बुद्धिजीवियों और बैरिस्टरों का शहर था। जहाँ पण्डित मोती लाल नेहरू, तेज बहादुर सप्रू, मदन मोहन मालवीय जैसे महत्वपूर्ण नेता निवास करते थे। अपनी परम्परा के अनुरूप इलाहाबाद ने इस बार भी संघर्ष करके आगे बढ़ाने की परम्परा का पालन किया। जेल से छूटने के बाद 4 अक्टूबर 1914 को श्रीमती एनी बेसेन्ट जब इलाहाबाद आयी तो उनका अभूतपूर्व स्वागत किया गया।

इस देश के मंच पर गांधी जी के प्रवेश करने के साथ जो परिवर्तन घटित हुए उनमें भी इलाहाबाद की महत्वपूर्ण भूमिका थी। असहयोग आन्दोलन को सबसे पहला समर्थन अखिल भारतीय खिलाफत कांग्रेस ने 1920 में अपने इलाहाबाद अधिवेशन में ही दिया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के सिलसिले में जवाहर लाल नेहरू ने इसी समय पहली बार जेल यात्रा की। 1929 में लाहौर अधिवेशन की अध्यक्षता भी श्री जवाहर लाल नेहरू ने किया। उन्हीं की अध्यक्षता में लाहौर कांग्रेस के अवसर पर रावी नदी के तट पर 26 जनवरी को पूर्ण स्वतंत्रता का निश्चय कांग्रेस ने किया। यह पहला ऐतिहासिक निर्णय था जिसने अब तक के चले आते हुए स्वतंत्रता आन्दोलन को एक निर्णायक मोड़ दिया। इसी समय के आस–पास पं० मोती लाल जी ने अपना निवास स्थान 'आनन्द भवन' राष्ट्र को सौंपा।

एक पिता के कारण अपना निवास स्थान उन्हें अपने पुत्र को देना चाहिए था लेकिन उन्होंने एक महान राष्ट्र सेवक के नाते अपना भवन देश की सबसे बड़ी संस्था भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष को दे दिया।

1928 से 1947 तक अखिल भारतीय कांग्रेस का प्रधान कार्यालय बराबर इलाहाबाद में ही रहा। नमक सत्याग्रह आन्दोलन में गांधी जी के आदेश पर राष्ट्रीय कांग्रेस जवाहर लाल जी के नेतृत्व में इस महान संघर्ष में आ गयी। जवाहर लाल नेहरू ने गिरफ्तार होने के पहले अपने पिता पं. मोतीलाल नेहरू जी को अध्यक्ष पद का उत्तराधिकारी बनाया। मोतीलाल नेहरू जी ने अस्वस्थ होते हुए भी नमक सत्याग्रह आन्दोलन को अपनी पूरी ताकत से आगे बढ़ाया और संघर्ष करते–करते मृत्यु को भी वरण किया। पत्नी स्वरूप रानी ने महिलाओं के जत्थे का नेतृत्व करते हुए सड़क पर पुलिस की मार खायी और वे धूल में बेहोश होकर गिर पड़ी।

किसान आन्दोलन की नींव इलाहाबाद में असहयोग के दिनों में ही पड़ चुकी थी। बाद में 1931 के 'लगान बन्दी आन्दोलन' में उसी चेतना का विकास हुआ। इस आन्दोलन में इलाहाबाद की हंडिया तहसील ने महत्वपूर्ण कार्य किया (वाजपेयी, डॉ0 राजेन्द्र कुमारी, 1985)।

चन्द्रशेखर 'आजाद' का क्रान्तिकारी संघर्ष

भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास में जिन क्रान्तिकारी वीरों का नाम अमर है, उनमें चन्द्रशेखर आजाद का नाम प्रथम पंक्ति के आत्म– बलिदानियों में से है। चन्द्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को हुआ था (गुप्ता, मन्मथनाथ, 1985)। यद्यपि उनका जन्म अलीराजपुर स्टेट, मध्य प्रदेश के भावरा नामक स्थान में हुआ था, किन्तु इलाहाबाद उनका कार्यक्षेत्र था और अन्त में यहीं पर वीरगति प्राप्त होने के कारण इलाहाबाद के साथ उनका सम्बन्ध अटूट रूप में जुड़ा हुआ है।

चन्द्रशेखर आजाद सदैव एक कांटे की तरह ब्रिटिश साम्राज्यवाद के गले में खटकते रहे। 27 फरवरी 1931 ई0 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में वे एकाएक पुलिस द्वारा घेर लिये गये। चारों ओर फैले सिपाहियों से कई घण्टों लड़ते रहे और गोलियाँ चलाते रहे, किन्तु अन्त में स्वयं की गोली के शिकार होकर वीरगति को प्राप्त हुए। कम्पनी बाग जिसका वर्तमान नाम मोतीलाल नेहरू पार्क है, जिस स्थान पर आजाद शहीद हुए थे, वहाँ पर उनका एक स्मारक बना हुआ है। आजाद का चरित्र वर्तमान और भविष्य में देशभक्त भारतीय युवकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

भारत छोड़ो आन्दोलन में इलाहाबाद नगर की भूमिका

8 अगस्त सन् 1942 को सायंकाल 8 बजे मौलाना अबुल कलाम की अध्यक्षता में महात्मा गांधी के द्वारा 'भारत छोड़ो' की घोषणा की गयी। इस घोषणा से सम्पूर्ण विश्व में यह समाचार बिजली की तरह फैल गया। ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध भारत में धीरे–धीरे जो असंतोष का ज्वालामुखी धधक रहा था। उसका यह भयंकर विस्फोट 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव के रूप में सर्वसम्मति से स्वीकृत हो गया। इस आन्दोलन की घोषणा के तत्काल बाद मौलाना आजाद, महात्मा गांधी, सरदार पटेल, जवाहर लाल नेहरू आदि मूर्धन्य, दिग्गज नेता बन्दी बना लिये गये और उस ऐतिहासिक अधिवेशन में जितने प्रतिनिधि उपस्थित हुए थे, वे सभी अपने घर पहुंचने से पहले या पहुंचने पर बन्दी बना लिये गये (यादव, प्रकाश चन्द्र, 1985)।

सम्पूर्ण देश नेता विहीन एवं किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया था। संयोगवश ब्रिटिश पार्लियामेन्ट में भारत के सचिव लार्ड एमरी ने यह वक्तव्य दे दिया कि भारत के नेता यह चाहते थे कि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य नष्ट करने के लिए रेलवे लाइनें उखाड़ दी जायें, तार के खम्भे उखाड़ दिये जाएं, कचहरियों पर अधिकार कर लिया जाये, थाने फूँक दिये जायें, सभी ब्रिटिश संस्थान नष्ट कर दिये जायें। इतना संकेत बहुत पर्याप्त था। छात्रों ने विशेषतः उत्तर भारत के छात्रों ने, उनमें भी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय व इलाहाबाद विश्वविद्यालय के

छात्रों ने इसे ही अपने नेता का आदेश मानकर इसके अनुसार आन्दोलन छेड़ दिया। तार के खम्भे तोड़ डाले गये, रेलवे पर अधिकार कर लिया गया। छात्रों के आदेश के अनुसार ही गाड़ियां चलने लगी, कचहरियों और थानों पर कांग्रेस के झण्डे टांगे जाने लगे, देखते–देखते सारी शासन व्यवस्था लुंज–पुंज कर दी गयी।

9 अगस्त को 5 बजे शाम को इलाहाबाद युनिवर्सिटी के विद्यार्थियों ने एक बहुत बड़ा जुलूस निकाला। यह जुलूस अलबर्ट रोड होते हुए पुरुषोत्तमदास पार्क पहुँचा। इसके बाद यहाँ से पुनः विद्यार्थियों का हुजूम पूरे शहर में घूमा और पुनः यहीं पार्क में आकर सभा हुई। कई विद्यार्थियों का भाषण हुआ और दूसरे दिन पुनः यहीं पार्क में आकर सभा हुई। कई विद्यार्थियों का भाषण हुआ और दूसरे दिन पुनः 4 बजे जुलूस निकालने का निश्चय हुआ। चूँकि इस समय सभी नेता बन्दी थे। अतः विद्यार्थियों ने इस आन्दोलन की कमान संभाली। इसी क्रम में 10 अगस्त 1942 को भी सम्पूर्ण शहर में जुलूस निकाला गया और इस दिन की कमान दो स्त्रियाँ राष्ट्रीय झण्डा लिए कर रही थी (यादव, प्रकाश चन्द्र 1985)।

11 अगस्त सन् 1942 को 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के अविस्मरणीय दिनों में इलाहाबाद नगर एवं जिले में लोगों ने राष्ट्रीय गतिविधियों में तन–मन एवं धन से भाग लिया। ग्राण्ड ट्रंक मार्ग पर स्थित एक छोटे से गाँव में सैदाबाद के किसानों ने जुलूस निकाला। पुलिस ने जुलूस को तितर–बितर होने का आदेश दिया। उनके ऐसा न करने पर मजिस्ट्रेट ने गोली चलाने का आदेश दिया। इसके फलस्वरूप किसानों ने 'इंकलाब जिन्दाबाद' के नारे के साथ गोलियों की बौछार का सामना करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी।

12 अगस्त को दिन में 11 बजे जुलूस निकाला गया, उस जुलूस को दो हिस्सों में किया गया। एक कचहरी की ओर गया और दूसरा कर्नलगंज इण्डियन प्रेस के रास्ते से गया। जैसे ही जुलूस इण्डियन प्रेस के पास पहुँचा वैसे ही कचहरी में लोगों ने गोली चलने की आवाज सुनी। अतः लोग कम्पनी बाग के अन्दर से जुलूस को घुमाकर कचेहरी पहुँचे। जब लोग कचहरी पहुँचे तो वहाँ देखा कि काफी लोग घायल हैं, वहाँ भीड़ अत्यधिक इकट्ठा हो गई। इस जुलूस में हजारों लोग थे, जिसमें काफी संख्या में युनिवर्सिटी की लड़कियाँ भी थीं। गोली चलने पर 'लाल पद्मधर' की मृत्यु हो गई। इस समाचार से शहर भर की जनता में क्रोध फैल गया। वे तार काटने लगे, डाकखानों पर धावा बोलकर उनके कागज आदि जलाने लगे। अंग्रेजी टोपी छीन–छीनकर जलाने लगे। कई सरकारी मोटरें भी जो किला से सामान लेकर जा रही थी, विद्यार्थियों ने जला दिया। पुलिस चौकी पर भी भीड़ आ गई और कई जगह लोगों ने झण्डा फहरा दिया।

आन्दोलनकारी लोगों ने कुछ डाकखाने या रजिस्ट्री ऑफिस आदि पर दखल कर लिया, कहीं–कहीं पर लोगों ने आग भी लगा दी।

12 अगस्त को गोली जब कचहरी में छात्रों पर पुलिस ने चलाई थी, उस समय अदालत में भूतपूर्व सब डिवीजनल अफसर श्री अमीर रजा साहब वहीं पर सामने अपने कमरे में थे और आंखों देखा बयान दिया था– ''मैंने निकट से देखा था कि श्री पद्मधर सिंह की मृत्यु कानूनन गोली चलाने से नहीं हुई बल्कि जानबूझकर उनकी हत्या की गई। दो सौ निहत्थे छात्रों पर गोली चलाना युद्धभूमि का वीरतापूर्ण कार्य न था। उन लोगों ने एक घंटे से अधिक समय तक गोली का सामना किया। इस स्थिति में लाठी और गोली की वर्षा की गई, जो सर्वथा अनुचित था। मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि पुलिस ने 10.10 मिनट पर 5 या 6 बार गोली चलाई। गोली चलाने पर भी सभी छात्र अपने स्थान पर लेट गये। केवल एक लड़की खड़ी थी जो तनिक भी नहीं घबराई। एक छात्र भी झण्डा लिए खड़ा था। कुछ घुड़सवार पुलिस की आँखों में आंसू आ गये। एक वीर छात्र पुलिस के बगल में खड़ा था और यह कह रहा था कि हम सभी भाई हैं। वह वीर छात्र गोली चलते रहने पर भी उनके बीच खड़ा था और अपनी बात दोहराता रहा। पुलिस उसके कथन से इतनी प्रभावित हुई कि लज्जावश अपने मुंह को दूसरी ओर फेर लिया। इतना ही नहीं तत्कालीन जिला मजिस्ट्रेट डिक्सन का चेहरा उस स्थिति को देखकर उदासीन हो गया था। वे जब अपने अदालत के कमरे में जा रहे थे, उनके पैर लड़खड़ा रहे थे।'' डिप्टी सुपरीटेन्डेन्ट पुलिस एस0एन0 आगा और सिटी मजिस्ट्रेट श्री एन्थोनी के रुख में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। सरकारी नीति के विरोध में श्री अमीर रजा ने डिप्टी कलेक्टर के पद से इस्तीफा दे दिया।

13 अगस्त 1942 को 'भारत छोड़ो' पूरी तेजी और जोश के साथ चल रहा था। इसमें भाग लेने वाले निम्नांकित सत्याग्रही अंग्रेजी पलटन की गोलियों से शहीद हुए :–

1. श्री मुरारी मोहन भट्टाचार्य (आयु 40 वर्ष), आप शाहगंज के रहने वाले थे और झा एण्ड कम्पनी में दवा की बिक्री करते थे।
2. श्री भगवती प्रसाद (24 वर्ष), मिल में काम करते थे और बादशाही मण्डी, इलाहाबाद के निवासी थे।
3. श्री अब्दुल मजीद– आप सब्जी मण्डी, इलाहाबाद के निवासी थे और विद्यार्थी थे। आपकी उम्र 18 वर्ष की थी।

14 अगस्त 1942 के दिन आन्दोलन और पुलिस का दमन चक्र दोनों जोर–शोर से चल रहा था। जिले और शहर दोनों जगह पुलिस ने गोली चलायी। निम्नांकित देश प्रेमियों ने आत्मोत्सर्ग किया :–

1. श्री द्वारिका प्रसाद (आयु 22 वर्ष)– आप विद्यार्थी थे और हीवेट रोड, इलाहाबाद के निवासी थे।
2. श्री लल्लन मिश्रा– आप किसान तथा समाज सेवी थे। आप तहसील करछना में करमा गाँव के निवासी थे।

17 अगस्त 1942 के दिन कीटगंज निवासी श्री महावीर जो एक दुकान के मालिक थे। जमुना के पुल पर पुलिस के आदेशों का उल्लंघन करने के कारण गोली से मार डाले गये।

24 अगस्त 1942 के दिन पुलिस ने सभाओं पर रोक लगा रखी थी। किन्तु श्री हजारी राम पाण्डेय ने जो हंडिया तहसील के अन्तर्गत बनकट के निवासी थे और उत्पाती सत्याग्रही थे। उन्होंने इस आज्ञा का उल्लंघन किया और पुलिस की गोली खाकर सहर्ष प्राण त्याग दिया। मृत्यु के समय आप की उम्र 32 वर्ष थी।

इन सात शहीदों के अलावा अज्ञात अनेक ऐसे देश प्रेमी थे जो 12 अगस्त 1942 को पुलिस की गोली से मृत्यु को प्राप्त हुए। अस्पतालों की रिपोर्ट के अनुसार काल्विन अस्पताल में मिलिट्री ट्रक द्वारा गोली से घायल होकर पाँच व्यक्तियों के निर्जीव शरीर लाए गये थे। इन लोगों की पहचान नहीं हो सकी क्योंकि इनके शवों को प्राप्त करने वाला कोई नहीं मिला। इनके शरीरों को पुलिस ने मिट्टी का तेल छिड़क कर जला दिया और इस प्रकार इलाहाबाद के अज्ञात शहीद आजादी की राह में प्राणोत्सर्ग करने वाले अनामियों की सूची में ही विद्यमान हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि भारत छोड़ों आन्दोलन में इलाहाबादियों ने अभूतपूर्व धैर्य, साहस और वीरता का परिचय दिया और देशहित में इलाहाबादी शहीद भी हुए।

संदर्भः

1. Pandey, Bishambhar Nath, Allahabad Retrospect and Prospect, The Municipal Press Allahabad. 1955, 140.

2. Report of the Select Committee on the affairs of the East India Company, 1832; 1: 483.
3. बाजपेयी, डॉ0 राजेन्द्र कुमारी (1985): लेख ‘1857 से 1942 तक के योगदान’ पुस्तक स्वतंत्रता संग्राम में इलाहाबाद, अखिल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सम्मेलन, इन्दिरा महानगर, प्रयाग द्वारा प्रकाशित पृष्ठ–1,2,3,3,3,4।
4. गुप्ता, मन्मथ नाथ (1985): ‘चन्द्रशेखर आजाद’ स्वतंत्रता संग्राम में इलाहाबाद, पृष्ठ–80।
5. श्रीवास्तव, शालीग्राम (1937): ‘प्रयाग प्रदीप’ पृष्ठ–22, 25, 39, 40, 41, 49, 53, 56, 57।
6. सिन्हा, हरेन्द्र प्रताप (1953): ‘भारत को प्रयाग की देन’ पृष्ठ–324, 112, 115, 117, 162।
7. यादव, प्रकाश चन्द्र (1985): लेख ‘सन् बयालिस के तूफानी दिन’ स्वतंत्रता संग्राम में इलाहाबाद, पृष्ठ– 35–40, 36।
8. यादव, प्रकाश चन्द्र (1985): लेख ‘बानर सेना की कप्तान’, पृष्ठ–20।